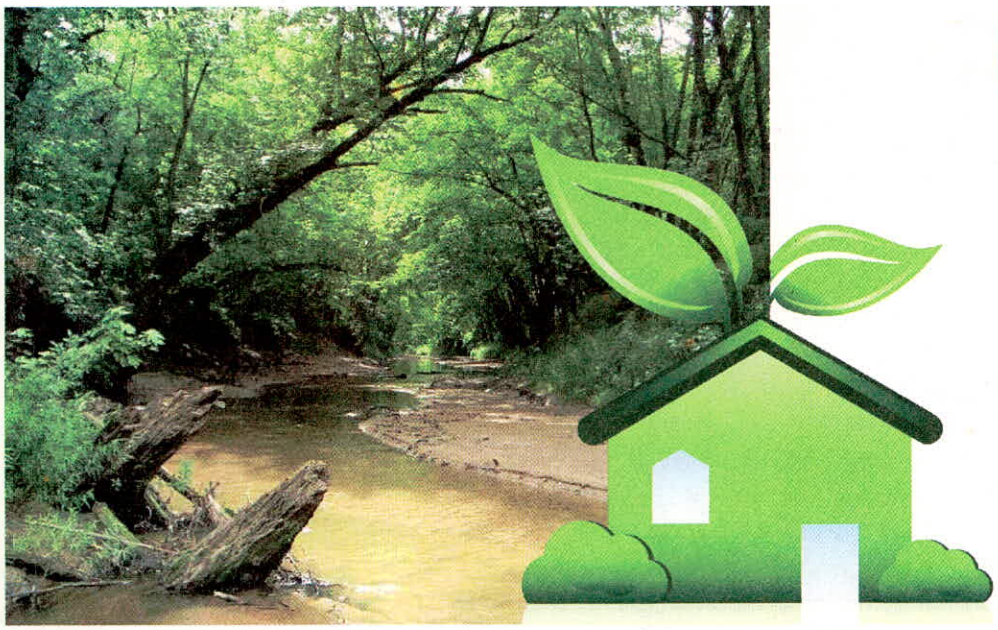

पर्यावरण संरक्षण
बेहतर कल के लिए

हेमलता सिंघल

सभी प्रकार के प्रदूषण से बचने के लिए यदि थोड़ा सा भी उचित दिशा में प्रयास करें तो बचा सकते हैं अपना पर्यावरण। सर्वप्रथम हमें जनाधिक्य को नियंत्रित करना होगा। छोटे-छोटे व बहुत कम आबादी वाले गाँवो को पहाड़ों पर सड़क, बिजली-पानी जैसी सुविधायें मुहैया कराने से बेहतर है उन्हें प्लेन में विस्थापित करें। इससे पहाड़ व जंगल कटान कम होगा, साथ ही पर्यावरण भी सुरक्षित रहेगा।

जब हम पर्यावरण की बात करते हैं तो उससे तात्पर्य है प्रकृति, वातावरण और वायुमण्डल। प्रकृति और उसका स्वभाविक रूप शुद्ध व निर्मल है किन्तु यदि वे दोनों किन्ही कारणों से प्रदूषित हो जाते हैं तो मानव जाति के साथ-साथ समस्त जीवों के लिए खतरा उत्पन्न हो जाता है। उस खतरे से सचेत रहने की नितान्त आवश्यकता है जो तभी सम्भव है जब प्रत्येक नागरिक इसको अपना व्यक्तिगत धर्म समझ कर पर्यावरण को अपने भविष्य के लिए सुरक्षा प्रदान करे। आने वाले कल में उन समस्याओं का सामना हमारी अपनी ही सन्तानों को करना पड़ेगा। हमारा पर्यावरण दूषित हो जाता है तो प्रकृति का जैविक सन्तुलन भी बिगड़ जाता है। ज्ञात-अज्ञात फसलों के रोग, जीव व मानव को अपनी चपेट में लेकर जन व धन दोनों को हानि पहुँचातें हैं।

अपने पर्यावरण को बेहतर बनाने के लिए हमें सबसे पहले अपनी मुख्य जरूरत 'जल' को प्रदूषण से बचाना होगा। कारखानों का गन्दा पानी, घरेलू गन्दा पानी, नालियों में प्रवाहित मल, सीवर लाइन का गन्दा निष्कासित पानी समीपस्थ नदियों और समुद्र में गिरने से रोकना होगा। कारखानों के पानी में हानिकारक रासायनिक तत्व घुले रहते हैं जो नदियों के जल को विषाक्त कर देते हैं, परिणामस्वरूप जलचरों के जीवन को संकट का सामना करना पड़ता है। दूसरी ओर हम देखते हैं कि उसी प्रदूषित पानी को सिंचाई के काम में लेते हैं जिससे उपजाऊ भूमि भी विषैली हो जाती है। उसमें उगने वाली फसल व सब्जियाँ भी पौष्टिक तत्वों से रहित हो जाती हैं जिनके सेवन से अवशिष्ट जीवननाशी रसायन मानव शरीर में पहुँच कर खून को विषैला बना देते हैं। कहने का तात्पर्य यही है कि यदि हम अपने कल को स्वस्थ देखना चाहते हैं तो आवश्यक है कि बच्चों को पर्यावरण सुरक्षा का समुचित ज्ञान समय-समय पर देते रहें। अच्छे व मंहगे ब्रांड के कपड़े पहनाने से कहीं महत्वपूर्ण है उनका स्वास्थ्य, जो हमारा भविष्य व उनकी पूँजी है।

कल-कारखानों की चिमनियों से निकलता धुआं पर्यावरण को प्रदूषित करता है।

पानी को गंदगी से मुक्त रखें इससे हमारा पर्यावरण प्रदूष ण रहित एवं रोगमुक्त रहेगा।

पर्यावरण को खुशहाल बनाने के लिए जरूरी है ज्यादा से ज्यादा वृक्षारोपण करें।

पर्यावरण को स्वस्थ एवं सुरक्षित रखने के लिए ज्यादा से ज्यादा पौधे लगाएं जाएं।

यदि हम अपने कल को स्वस्थ देखना चाहते हैं तो आवश्यक है कि बच्चों को पर्यावरण सुरक्षा का समुचित ज्ञान समय-समय पर देते रहें। अच्छे व मंहगे ब्रांड के कपड़े पहनाने से कहीं महत्वपूर्ण है उनका स्वास्थ्य, जो हमारा भविष्य व उनकी पूँजी है।

आज वायु प्रदूषण ने भी हमारे पर्यावरण को बहुत हानि पहुँचाई है। जल प्रदूषण के साथ ही वायु प्रदूषण भी मानव के सम्मुख एक चुनौती है। माना कि आज मानव विकास के मार्ग पर अग्रसर है परन्तु वहीं बड़े-बड़े कल-कारखानों की चिमनियों से लगातार उठने वाला धुँआ, रेल व नाना प्रकार के डीजल व पेट्रोल से चलने वाले वाहनों के पाइपों से और इंजनों से निकलने वाली गैसें तथा धुँआ, जलाने वाला हार्डकोक, ए.सी. , इन्वर्टर, जेनरेटर आदि से कार्बन डाईऑक्साइड, नाइट्रोजन, सल्फ्यूरिक एसिड, नाइट्रिक एसिड प्रति क्षण वायुमण्डल में घुलते रहते हैं। वस्तुतः वायु प्रदूषण सर्वव्यापक हो चुका है।

सही मायनों में पर्यावरण पर हमारा भविष्य आधारित है, जिसकी बेहतरी के लिए ध्वनि प्रदूषण की ओर भी ध्यान देना होगा। अब हाल यह है कि महानगरों में ही नहीं बल्कि गाँवों तक में लोग ध्वनि विस्तारकों का प्रयोग करने लगे हैं। बच्चे के जन्म की खुशी, शादी-पार्टी सभी में डी.जे. एक आवश्यकता समझी जाने लगी है। जहाँ गाँवों को विकसित करके नगरों से जोड़ा गया है। वहीं मोटर साइकिल व वाहनों की चिल्ल-पों महानगरों के शोर को भी मुँह चिढ़ाती नजर आती है। औद्योगिक संस्थानों की मशीनों के कोलाहल ने ध्वनि प्रदूषण को जन्म दिया है। इससे मानव की श्रवण-शक्ति का ह्रास होता है। ध्वनि प्रदूषण का मस्तिष्क पर भी घातक प्रभाव पड़ता है।

जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण और ध्वनि तीनों ही हमारे व हमारे फूल जैसे बच्चों के स्वास्थ्य को चौपट कर रहे हैं। ऋतुचक्र का परिवर्तन, कार्बन डाईऑक्साइड की मात्रा का बढ़ना हिमखण्ड को पिंघला रहा है। सुनामी, बाढ़, सूखा, अतिवृष्टि या अनावृष्टि जैसे दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं, जिन्हें देखते हुए अपने बेहतर कल के लिए '5 जून' को समस्त विश्व में 'पर्यावरण दिवस' के रूप में मनाया जा रहा है।

'पौधा लगाने से पहले वह जगह तैयार करना आवश्यक है जहाँ वह विकसित व बड़ा होगा।'

उपर्युक्त सभी प्रकार के प्रदूषण से बचने के लिए यदि थोड़ा सा भी उचित दिशा में प्रयास करें तो बचा सकते हैं अपना पर्यावरण। सर्वप्रथम हमें जनाधिक्य को नियंत्रित करना होगा। दूसरे जंगलों व पहाड़ों की सुरक्षा पर ध्यान दिया जाये। देखने में आता है कि पहाड़ों पर रहने वाले लोग कई बार घरेलू ईंधन के लिए जंगलों से लकड़ी काटकर इस्तेमाल करते हैं जिससे पूरे के पूरे जंगल स्वाहा हो जाते हैं। कहने का तात्पर्य है जो छोटे-छोटे व बहुत कम आबादी वाले गाँव हैं उन्हें पहाड़ों पर सड़क, बिजली-पानी जैसी सुविधायें मुहैया कराने से बेहतर है उन्हें प्लेन में विस्थापित करें। इससे पहाड़ व जंगल कटान कम होगा, साथ ही पर्यावरण भी सुरक्षित रहेगा।

महानगरों में वन-उपवन विकसित किये जाएं। सार्वजनिक वाहनों में सुधार करके वायु व ध्वनि प्रदूषण कम किये जायें। अन्त में चेतावनी स्वरूप मैं चार लाइन लिख रही हूँ -

'पर्वतों के चीर सीने सड़कें
बनाओगे अगर।
पर्यावरण को भारी नुकसान भी
होगा मगर।।
जंगलों को काट कर बहुमंजिली
इमारतें जो बनीं।
स्वस्थ पर्यावरण से वंचित, भावी पीढ़ी
होंगी सभी।।'

संपर्क सूत्र :
डॉ. हेमलता सिंघल, 70/5, पूर्वावली, गणेशपुर, रुड़की